आप पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो सकते हैं !

इस पाठ के सम्बन्ध में:

बाइबल कहती है : ''पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो जाओ!'' (इफि.5:18) इसका अर्थ यह है कि मसीह यीशु के प्रत्येक अनुयायी को पवित्र आत्मा की आवश्यकता है। जब आप पवित्र आत्मा प्राप्त करते हैं, आपको परमेश्वर की सामर्थ्य प्राप्त हो जाती है। इससे आपके जीवन में परिवर्तन आ जाया करता है !

आज के विषय है:

- **पवित्र आत्मा कौन है?**
- **पवित्र आत्मा की आवश्यकता आपको किस लिये है?**
- **पवित्र आत्मा से परिपूर्ण कैसे हुआ जाये।**

आप ऐसा कीजिये:

✔ अपनी बाइबल में संबंधित पद खोजकर उनमें चिन्ह लगाइये ।

✔ अध्ययन कीजिये! आप जितना अधिक अध्ययन करेंगे उतनी ही अधिक स्पष्ट रीति से विषय को समझ सकेंगे।

प्रभु आपको आशीष दें!

1 पवित्र आत्मा कौन है?

परमेश्वर की स्तुति हो! आपने उद्धार प्राप्त कर लिया है! आपने विश्वास से मसीह यीशु को अपने जीवन में स्वीकार कर लिया है। आपके जीवन में इससे अधिक महत्त्वपूर्ण निर्णय और कोई नहीं हो सकता। हां, यदि आपके मन में यह संदेह उठ रहा है कि आपका उद्धार हुआ भी है या नहीं, तो एक बार फिर पाठ संख्या 2 पर दृष्टि डालिये।

जब आप मसीह यीशु को अपने जीवन में आमंत्रित करते हैं, आपके जीवन में उसी क्षण कुछ हुआ करता है - भले ही आपको कोई विशेष अनुभव न हुआ हो। मसीह यीशु में आने पर आपको क्या-क्या उपलब्ध हो जाया करता है, यह ज्ञात करने में आपका सारा जीवन लग सकता है। आज आप पवित्र आत्मा के सुंदर-सुखद और अनोखे जगत में प्रवेश करेंगे। यह इसलिये संभव है कि आपने मसीह यीशु को अपना कर उसे अपने जीवन का स्वामी बना लिया है।

पवित्र आत्मा कौन है? (जारी है)

पवित्र आत्मा स्वयं परमेश्वर हैं - और वह आपके जीवन में कार्य करते रहते हैं!

2 कुरि 3:16-18 पवित्र आत्मा परमेश्वर है, आपके जीवन में उनकी महत्त्वपूर्ण भूमिका है।

मत्ती 28:19 प्रथम तीन पाठों में आप सम्पूर्ण त्रिएकत्व के विषय में सीखते है: परमेश्वर पिता, परमेश्वर पुत्र और परमेश्वर पवित्र आत्मा। किन्तु परमेश्वर के साथ जीवन में आगे बढ़ना केवल उनके विषय जान लेने से कहीं अधिक है। पवित्र आत्मा परमेश्वर का अनुभव करने एवं उनके निकट बनें रहने में आपकी सहायता करता रहेगा। वह इसी समय आप में अनेक सुंदर कार्य करने में व्यस्त हैं; वही तो हैं, जिसके द्वारा आप मसीह यीशु के निकट आये हैं। बिना पवित्र आत्मा के आप मसीह यीशु को अपने जीवन का स्वामी मान ही नहीं सकते थे।

प्रभु यीशु के अनुयायी होने का निर्णय कौई बौद्धिक निर्णय नहीं है। यह तो एक आत्मिक जीवन-शैली है!

पुराना नियम हमसे पवित्र आत्मा की प्रतिज्ञा करता है।

सृष्टि:	उत्पत्ति 1:2
यूसुफ:	उत्पत्ति 41:38
70 प्राचीन नायक:	गिन 11:25
गीदोन:	न्यायी 6:34
राजा दाऊद:	1 शमूएल 16:13
एलिय्याह:	2 राजा 2:15, 16
नबियों की नबूवते:	यशा 44:3; यहे. 36:26,27; जक 4:6
नित्य बढ़ती प्रत्याशा:	मरकुस 1:7,8

उत्प 1:2 आरंभ से ही प्रारंभ करें! सृष्टि के निर्माण के समय से ही वहां पवित्र आत्मा क्रियाशील थे। परमेश्वर अपने जो भी कार्य करते हैं वह महान् आश्चर्य कर्म हुआ करते हैं, और वहां

गिन 11:25 पवित्र आत्मा कार्यरत हुआ करते हैं। इस्राएल के प्राचीन नायकों में तथा नबियों में पवित्र

यहेज 2:2 आत्मा सक्रिय थे। उनके अनुसार अनेक शताब्दियों तक नबी एक बेहतर वस्तु के विषय बोलते रहे। ***उन्होंने नबूवत की, कि सब लोगों पर पवित्र आत्मा उतरेगे।*** चाहे वह

योएल 2:28,29 स्त्री हों या पुरूष, बालक हों या बालिकाएं। परमेश्वर का पवित्र आत्मा आकर हमारे हृदयों

यहेज 36:26,27 में परिवर्तन ला देंगे और हम सब पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो जायेंगे, हम परिपूर्ण हो जायेंगे प्रेम, विश्वास और सामर्थ्य से। कैसी महान हैं ये प्रतिज्ञाए! और ये सभी हमारे लिये मसीह यीशु में पूर्ण हो गयी।

आप पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो सकते हैं

मसीह यीशु स्वयं पवित्र आत्मा से परिपूर्ण थे

लूका 1:35
लूका 4:1
प्रेरि 10:38
1 यूह 4:17
यूह 14:12

बाइबल यह स्पष्ट बतलाती है कि मसीह यीशु न केवल पवित्र आत्मा की शक्ति में उत्पन्न हुए थे, वरन वह पवित्र आत्मा से परिपूर्ण एवं अभिषिक्त भी थे। (दूसरे शब्दों में उनके भीतर पवित्र आत्मा का निवास था, उनके माध्यम से पवित्र आत्मा अपना कार्य करने में लगे हुए थे)। पवित्र आत्मा उन्हें संचालित भी किया करते थे, ठीक वैसे ही जैसे हम उनके द्वारा संचालित किये जाते हैं!

मसीह यीशु जो कुछ थे वह तो हम कभी नहीं हो सकते, क्योंकि मसीह यीशु स्वयं परमेश्वर हैं ... किन्तु यह स्वयं मसीह यीशु का आदेश है कि उनके अनुचर उनके समान बनें। फिर उन्होनें यह प्रतिज्ञा भी की है कि हम वैसे ही कार्य करेंगे जैसे उन्होंने किये थे - और उनसे बड़े चमत्कार भी! कैसे? पवित्र आत्मा की सामर्थ्य के प्रभाव से! इस पाठ से आप यह सीखेंगे कि यह कैसे होता है।

मसीह यीशु और पवित्र आत्मा

मसीह यीशु का जन्म	• पवित्र आत्मा की शक्ति से नारी गर्भवती हुई	लूका 1:35
	• मरियम से उत्पन्न हुए	लूका 2:7
पवित्र आत्मा की सामर्थ्य में की गयी सेवा	• प्रायः 30 वर्ष तक मसीह यीशु बुद्धि और डीलडौल में विकसित होते गये।	
	• मसीह यीशु का बपतिस्मा एवं उनका पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होना	लूका 3:21, 22;4:1
	• प्रायः तीन वर्ष पवित्र आत्मा की सामर्थ्य में की गयी सेवा	प्रेरि के कार्य 10:38
† मसीह यीशु द्वारा आत्मा का दान	• हमारे लिये पवित्र आत्मा भेजने की प्रतिज्ञा	यूह 16:7
	• मसीह यीशु की मृत्यु एवं पुनरुत्थान	यूह 20–21
	• पवित्र आत्मा का अवतरण	प्रेरि 2

मसीह यीशु ने हम को पवित्र आत्मा देने की प्रतिज्ञा की

यूह 16:5-7
यूह 17:26

मसीह यीशु ने अपने शिष्यों से एक महत्वपूर्ण बात कही: ''मेरा जाना तुम्हारे भले ही के लिये है। यदि मैं न जाऊं, तो वह सहायक (पवित्र आत्मा) ही नहीं आयेगा''। क्या आप उस स्थिति की कल्पना कर सकते हैं जिसमें आपको इस्राएल देश में मसीह यीशु के साथ निवास करने का सुअवसर मिले? क्या कोई स्थिति इस से अधिक उत्तम हो सकती है? मसीह यीशु की यह प्रतिज्ञा है कि पवित्र आत्मा के माध्यम से वह आकर **हमारे जीवन** में निवास करेंगे - सदा सर्वदा!

लूका 24:49
यूह 14:16

प्रेरि 1:4,5

पृथ्वी के अपने जीवन काल के अंतिम दिनों में, मसीह यीशु ने पवित्र आत्मा भेजने की प्रतिज्ञा की: ''मैं तुम्हारे लिये उसे भेजूंगा जिसकी प्रतिज्ञा पिता ने की है; किन्तु तुम इसी नगर में उस समय तक रुके रहना जब तक स्वर्ग से भेजी गयी शक्ति से तुम सुसज्जित न हो जाओ।'' यह स्पष्ट ही है कि पवित्र आत्मा उनके लिये अत्यंत आवश्यक था जिन्हें मसीह यीशु के अनुचरों के रूप में वह सब पूर्ण करना था जब मसीह यीशु स्वर्ग पर उठा लिये गये थे। कुछ समय पूर्व मसीह यीशु ने कहा था, ''यरुशलेम न छोडना किन्तु मेरे पिता द्वारा प्रतिज्ञा किये गयें उपहार की प्रतीक्षा करना, जिसके विषय तुमने मेरे द्वारा सुना था''। मसीह यीशु ने यह भी कहा था, ''कुछ ही दिनो पश्चात तुम ***पवित्र आत्मा से बपतिस्मा पाओगे।***''

2 मसीह यीशु : ''पवित्र आत्मा से बपतिस्मा देते हैं''

मसीह यीशु को यह ज्ञात था कि बिना पवित्र आत्मा के उनके शिष्यों के जीवन में न तो
ज़क 4:6 परमेश्वर की सामर्थ्य के कार्य प्रकट हो सकेंगे और न परमेश्वर का प्रेम। बिना पवित्र आत्मा के मानव के लिये परमेश्वर की योजनाएं कभी भी पूर्ण नहीं हो सकती थीं। यही बात हम पर भी लागू होती है; जिस जीवन की योजना परमेश्वर ने हमारे लिये तैयार की है उसे
यूह 16:7 जीने के लिये हमें आवश्यकता होती है पवित्र आत्मा की। आइये, देखें कि मसीह यीशु की पवित्र आत्मा भेजने की पतिज्ञा का क्या अर्थ है।

1. तुम्हारे भीतर से पवित्र आत्मा नदी की तरह बह निकलेंगे।

मसीह यीशु सदैव ही पवित्र आत्मा के विषय निर्भीकतापूर्वक बातें किया करते थे, क्योंकि वह यह चाहते थे कि लोग पवित्र आत्मा के विषय में ज्ञान प्राप्त करें। उस समय जब महोत्सव के समय यरुशलेम में लोगों की भीड़ लगी हुई थी; मसीह यीशु खड़े हुए और पवित्र आत्मा के विषय में उच्च स्वर में पुकार कर कहा : यदि कोई प्यासा है वह मेरे निकट आये और पिये। जो काई मुझ पर विश्वास करता है, जैसा कि पवित्र शास्त्र में कहा गया
यूह 7:37-39 है, ''उसके भीतर से जीवित जल की **नदियां** बह निकलेंगी। यहां मसीह यीशु का तात्पर्य था कि पवित्र आत्मा जो कुछ समय पश्चात उन विश्वास करने वालों को प्राप्त होने वाला था।'' यहां मसीह यीशु ने ''कोई'' शब्द का प्रयोग किया जो स्वतः में प्रत्येक मानव को समेट लेता है। चाहे कोई भी हो उसे मसीह यीशु पर विश्वास करने के द्वारा पवित्र आत्मा की जीवन दायी सामर्थ्य उपलब्ध हो जायेगी। पवित्र आत्मा के आने पर जो परिवर्तन होते
जक्र 14:8 हैं वे भी स्पष्ट रूप से देखे जा सकेंगे: स्वयं परमेश्वर के अपने जीवन की सशक्त नदियां
यशाय 12:3 आप में से बह निकलेगी!

2. मसीह यीशु ने कहा : ''तुम्हें पवित्र आत्मा से बपतिस्मा प्राप्त होगा''

प्रेरि 1:5 'नया नियम' मूलतः अधिकांश यूनानी भाषा में लिखा गया था। इसमें ''बपतिस्मा'' का अर्थ यूनानी भाषा में होता है - ''डूबो देना।'' अर्थात मसीह यीशु की यह कामना है कि आप पवित्र आत्मा में इस तरह ''डूब'' जायें कि पवित्र आत्मा आप में ''समा'' जाये, पवित्र आत्मा आपके चारों ओर हो और आप उस के मध्य रह जायें। जब ऐसा हो जायेगा आप अपने जीवन में आश्चर्यजनक अन्तर देखेंगे। आप ही देखिये कि पवित्र आत्मा मसीह यीशु के शिष्यों में कैसे भारी परिवर्तन ले आये थे जब वे पवित्र आत्मा में डूब गये थे:

मत्ती 26:69-75 • भीरु पतरस एक सहासी साक्षी बन गया!
प्रेरि 2:14 आप में भी यही परिवर्तन आ सकता है!
प्रेरि 2:2-4 • वे सभी अन्य भाषाएं बोलने लगे! यह आप भी करेंगे!
• प्रथम विश्वासियों का छोटा समूह तेजी से विकसित हो रही कलीसिया बन गया; नित नये-नये लोग प्रतिदिन मसीही बनते जा रहे थे। आप भी लोगों को मसीह यीशु के पास ला सकते हैं।
प्रेरि 2:40,41 • जो स्वास्थ्यदायी शक्ति मसीह यीशु में थी अब वही उनके शिष्यों के पास थी ! यह
प्रेरि 2:47, 6:7 आपके पास भी आ सकती है!
प्रेरि 3:1-10 • सबसे महत्वपूर्ण तथ्य : हजारों विश्वासी परमेश्वर के प्रेम के अंग बन गये। जो कुछ उनका आपना था वह मिलकर बांटने लगे, वे दैनिक जीवन में एक दूसरे की सहायता

रोम 5:5 करने लगे। पवित्र आत्मा यही प्रेम आपके जीवन में भी ले आता है ! पिता परमेश्वर ने इसी उपहार की प्रतिज्ञा की थी - उन सभी के लिये जो मसीह यीशु पर विश्वास
प्रेरि 4:32-35 करते हैं। आज भी, विश्व में पवित्र आत्मा ही ये सारे परिवर्तन ला रहे हैं !

3. पवित्र आत्मा का युग प्रारंभ हो चुका है।

पवित्र आत्मा के पृथ्वी पर उतरने का दिन एक ऐतिहासिक दिन था। सैकड़ों वर्ष पूर्व की गयी प्रतिज्ञा आज एक वास्तविकता थी। यह एक नवयुग का प्रारंभ था - पवित्र आत्मा
प्रेरि 2:2-4 का युग। यह युग आज भी चल रहा है। ''एकाएक आकाश से बड़ी आंधी-जैसी ध्वनी सुनाई पड़ी और सारा घर, जहां वे बैठे हुए थे गूंज उठा। उन्हें तब आग के सदृश जीभें दिखाई दीं जो विभाजित होकर उनमें से प्रत्येक पर आ ठहरी। ... ***वे सब पवित्र आत्मा से भर गये और पवित्र आत्मा ने उन्हें बोलने की सामर्थ्य दी; अतः वे विभिन्न भाषाएं बोलने लगे।***'' पवित्र आत्मा ने उनके जीवन परिवर्तित कर दिये और उनके द्वारा सम्पूर्ण यरुशलेम परिवर्तित हो गया। पवित्र आत्मा द्वारा उत्पन्न प्रेम और सामर्थ्य रोके नहीं जा सकते थे! जीवन परिवर्तित कर देने वाली ये घटनाएं यरुशलेम के बाहर भी हो रही थीं। कुरनेलियुस, उसके मित्र और संबंधी भी पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो गये थे। मसीह
प्रेरि 10:44-47 ने उनके लिये भी पवित्र आत्मा वैसे ही भेजा जैसा उन्होंने पतरस एवं अन्य शिष्यों के लिये भेजा था। और तब से अब तक यह होता ही आ रहा है।

4. पवित्र अत्मा अब उपलब्ध हैं।

जब से पवित्र आत्मा उतरा है, वह सभी प्यासों को उपलब्ध है - जैसा कि मसीह यीशु ने प्रतिज्ञा में कहा था।

यदि आप प्यासे हैं, आप पीयें। यदि आप परमेश्वर के लिये प्यासे हैं तो उनसे पवित्र आत्मा के वरदान के लिये प्रार्थना कीजिये। जैसे आपने मसीह यीशु को अपने जीवन में आमंत्रित किया है, पवित्र आत्मा को भी कीजिये। जैसे मसीह यीशु आपके जीवन में आकर निवास करने लगे, पवित्र आत्मा भी आपके जीवन में निवास करने लगेंगे। परमेश्वर के व्यवहार में कोई पक्षपात नहीं हुआ करता। पतरस यह देख भौचक्का रह गया कि यहूदियों तथा सामरिया निवासियों को भी उन्हीं की तरह ही पवित्र आत्मा दिया गया था - प्रतिज्ञा
प्रेरि 2:38,39 में सभी सम्मिलित हैं - आप भी और मैं भी। ''तुमको पवित्र आत्मा का वरदान प्राप्त होगाः यह प्रतिज्ञा तुम्हारे और तुम्हारी सन्तान के लिये है और उन सब के लिये भी जो दूर हैं और जिनको हमारे प्रभु परमेश्वर बुलाते हैं।'' और फिर यह भी सुनियेः ''जब तुम
लूका 11:13 बुरे होकर भी, अपनी संतान को उत्तम वस्तुएं देना जानते हो, ***तब स्वर्गिक पिता अपने***
1 कुरि 2:12 ***मांगने वालों को पवित्र आत्मा क्यों न देंगे!***'' जो काई मांगता है उसे प्राप्त भी होता है। हां इसमें आप भी सम्मिलित हैं। यह परमेश्वर की कैसी सुंदर प्रतिज्ञा है! प्रभु परमेश्वर का हमारे लिये उनके इस अविश्वसनीय प्रेम के लिये स्तुति कीजियें!

बाइबल खोज

पवित्र आत्मा किसके समान हैं?

शिष्यों के साथ मसीह यीशु के अंतिम घंटे अत्यंत महत्त्वपूर्ण थे। इस समय उन्होंने उन्हें अपनी वसीयत सौंप दी, और यह पवित्र आत्मा से संबंधित थी। यह वसीयत केवल उन्हीं शिष्यों के लिये नहीं थी वरन् यह आपके और मेरे लिये भी थी। यूहन्ना के द्वारा लिखित शुभ संदेश में मसीह यीशु स्पष्ट करते हैं कि पवित्र आत्मा कैसा होता है। आइये अध्ययन के लिये खोलें यूहन्ना 14 अध्याय, पद 15 से 16 अध्याय के पद 16 तक।

✔ पहले, पढियें यूहन्ना 14:15-16:16 और पढते हुए ''आत्मा'' और ''सहायक'' शब्दों को चिन्हित करते जाइये। ''सहायक'' पवित्र आत्मा का दूसरा नाम है।

✔ दूसरे, पवित्र आत्मा से संबंधित उन सारे तथ्यों की एक सूची बनाइये जिनके विषय मसीह यीशु ने उल्लेख किया है।

-पवित्र आत्मा का वर्णन कीजिये और समझायें कि वह कौन है:

-पवित्र आत्मा क्या-क्या कार्य करेंगे इसके विषय मसीह यीशु ने जो कुछ कहा है, यहां लिखिये:

आप पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो सकते हैं

✔ **तीसरे, इन पदों को पढ़िये और लिखिये कि शिष्यों पर पवित्र आत्मा के उतर आने पर क्या–क्या हुआ:**

प्रेरि 2:4 _____

_____

प्रेरि 2:17 _____

_____

प्रेरि 5:32 _____

_____

प्रेरि 7:55 _____

_____

प्रेरि 8:15-17 _____

_____

प्रेरि 8:29 _____

_____

प्रेरि 9:31 _____

_____

प्रेरि 10:44-46 _____

_____

प्रेरि 11:28 _____

_____

प्रेरि 13:52 _____

_____

_____

प्रेरि 19:6 _____

3 आप का पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होना आवश्यक क्यों है?

इफि 5:18-20 बाइबल का आदेश है: ''पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो जाओ।'' सभी प्रथम विश्वासी पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो गये थे। किन्तु यह आवश्यक क्यों है कि हम पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो जायें? आइये, कुछ विचारोत्तेजक प्रश्नों पर विचार करें :

• क्या मेरा प्रेम सिद्ध और निःस्वार्थ है?

☐ **हाँ** ☐ **नहीं**

यूह 13:34 प्रेम आत्मा का फल है। यह परमेश्वर की कामना है कि हम सभी उनके प्रेम से परिपूर्ण हो जायें। मसीह यीशु का स्पष्ट आदेश था, ''मैं तुम्हें एक नया आदेश दे रहा हूं : एक दूसरे से प्रेम करो।'' वह सहायता के लिये तत्पर है। सब समस्याओं का समाधान है पवित्र
रोम 5:5 आत्मा। ''पवित्र आत्मा के माध्यम से परमेश्वर ने अपना प्रेम हमारे हृदयों में उण्डेल दिया है – वह पवित्र आत्मा जो स्वयं उन्होने हमें दिया है।'' प्रेम की नदियां आप में से बह
गल 5:16-26 निकलेंगी ! पौलुस प्रेरित ने इसे ही आत्मा का फल कहा है।

• क्या मैं निर्भीकतापूर्वक मसीह यीशु की साक्षी देता हूँ?

☐ **हाँ** ☐ **नहीं**

यदि ''नहीं'', तो आपमें वह परिवर्तन आ जायेगा जब आप पवित्र आत्मा को यह अवसर देंगे कि वह आपके जीवन को सामर्थ्य से परिपूर्ण कर दें।

प्रेरि 1:8 मसीह यीशु के विषय अन्य लोगों को बतलाने के निर्भीकता केवल पवित्र आत्मा ही आपको दे सकता है। यीशु की प्रतिज्ञा है, ''जब पवित्र आत्मा तुम पर आयेगा, तब तुम सामर्थ्य प्राप्त करोंगे और ... पृथ्वी के सीमान्त तक मेरे साक्षी होंगे।'' यदी आप मसीह यीशु की साक्षी निर्भीकतापूर्वक दे रहे हैं, पवित्र आत्मा आपको और अधिक प्रभावशाली साक्षी बनाकर अधिक आनन्द और सामर्थ्य से परिपूर्ण कर देगा कि आप और अधिक लोगों को मसीह यीशु के पास ला सकें।

• क्या मैं पवित्र शास्त्र को और अपने लिये परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं को अच्छी–तरह समझता हूँ?

☐ **हाँ** ☐ **नहीं**

1 कुरि 2:12 पवित्र आत्मा ही पवित्र शास्त्र के तथ्य एवं परमेश्वर की आपके लिये दी गयी प्रतिज्ञाएं समझने में आपकी सहायता किया करते हैं। पौलुस प्रेरित ने कुरिन्थियुस के मसीहियों को
इफि 1:17, 18 लिखे प्रथम पत्र दूसरे अध्याय तथा 12वें पद में कहा है, **''हमें सांसारिक नहीं वरन परमेश्वर की ओर से आत्मा प्राप्त हुआ है जिससे हम वह सब जान सकें जो परमेश्वर ने अनुग्रह कर हमें दिया है !''** आपकी अंतरआत्मा की आंखों को बुद्धि और प्रकाशन का आत्मा ज्योति प्रदान किया करते हैं। बिना पवित्र आत्मा के परमेश्वर की योजनाएं एवं अभिप्राय समझना आपके लिये असंभव होगा।

आप पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो सकते हैं

1 कुरि 12:7-11 • **क्या आपके पास वे आत्मिक वरदान हैं जिनका उल्लेख पौलुस प्रेरित ने कुरिन्थियों निवासियों को 1 कुरि 12:7-11 पद में किया है? क्या आप के पास ज्ञान का भंडार है, क्या आप नबूवत किया करते हैं, क्या आप रोगियों को स्वस्थ्य किया करते हैं अथवा, क्या आप अन्य भाषाएं बोला करते हैं?**

☐ हाँ ☐ नहीं

1 कुरि 14:1 पवित्र आत्मा ये वरदान उन्ही विश्वासियों को प्रदान किया करते हैं जिन्हें इसकी अभिलाषा हुआ करती है। इसी पुस्तक के 14:1 पद में पौलुस ने आदेश दिया है, ''आत्मिक वरदानों की प्राप्ति के लिये उत्सुक रहो'' ये वरदान आपके लिये ही दिये गये हैं!

कैसा रहा आपका परिणाम?

यदि आपने चार प्रश्नों के उत्तर ''नहीं'' में दिये हैं चिन्ता न कीजिये। इसे दूर करने का उपाय है। परमेश्वर इस स्थिति को पलटने में समर्थ हैं। यह पवित्र आत्मा के द्वारा पूर्ण होगा। पवित्र आत्मा से आग्रह कीजिये कि प्रतिदिन वह आपको परिपूर्ण किया करे। पवित्र आत्मा एक उत्तम मित्र हैं। वह आपके सहायक हैं, परामर्शदाता हैं। समस्त सत्य की ओर वही आपको ले जाया करते हैं। यदि आप उन्हीं के हाथों में अपने जीवन का संपूर्ण नियंत्रण सौंप देंगे वह आपके जीवन में क्रांति उत्पन्न कर देंगे। यह कैसे होगा आप आगे पढियें।

कार्य का समय

याकु 2:17

विश्वास की अभिव्यक्ति होती है कर्म में

यदि आप केवल पढ़ते रहें, बातें करते रहें, विचार ही करते रहें और कोई प्रयास ही न करें तो आपका विश्वास कोई कार्य नहीं कर पायेगा। इस पाठ में हम आपसे आग्रह कर रहे हैं कि जो कुछ परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की है आप उसे ले लें।

प्रेरि 2:4

आपका अनुभव वही होगा जो प्रथम शिष्यों का था। ''वे सब पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो गये और पवित्र आत्मा ने उन्हें बोलने की सामर्थ्य दी: अतः वे विभिन्न भाषाएं बोलने लगे।''

1. पवित्र आत्मा से बपतिस्मा ''सभी'' के लिये ठहराया गया है।

ध्यान दीजिये, लिखा है, ***''वे सब''*** पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो गये। वहां उस समय 120 व्यक्ति एकत्र थे। वे सभी विभिन्न जीवन की परिस्थितियों के स्त्री और पुरुष थे। पवित्र आत्मा प्राप्त करने के लिये आपको किसी विशेष योग्यता की आवश्यकता नहीं होती। बस, मसीह यीशु को प्रभु के रूप में स्वीकार करना ही एकमात्र शर्त है।

2. ''सभी परिपूर्ण हो गये थे ...''

इस समय आप इस प्रकार प्रभु परमेश्वर को धन्यवाद दीजिये, *''पिता जी, मैं आपका अत्यंत आभारी हूं कि मैं मसीह यीशु पर विश्वास करने के कारण पवित्र आत्मा प्राप्त करने के लिये तत्पर हूँ।''*

प्रेरि 19:6

जब आप मांगते हैं, आप प्राप्त करते हैं। आपको प्रतिज्ञा करने की आवश्यकता नहीं होती, क्योंकि पवित्र आत्मा तो पहले ही आपको दिये जा चुके हैं। प्रेरितों के अध्याय 19, पद 6 के अनुसार अकसर एक विश्वासी पवित्र आत्मा प्राप्त करने के इच्छुक लोगों पर हाथ रखा करता था। जो पवित्र आत्मा के भूखे थे, और ***वे तुरंत ही पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो जाया करते थे*** ... आप मसीह यीशु को एक निर्णय लेने के द्वारा स्वीकार किया करते हैं, न कि किसी अनुभूति के कारण। आपने कहा थ: ''प्यारे प्रभु यीशु, मैं अपको आपने उद्धारक के रूप में स्वीकार करता हूं।'' ठीक यही आपको पवित्र आत्मा प्राप्त करने के लिये करना होता है; और आप पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो जाते हैं। कुछ लोगों को तुरंत ही एक सशक्त उपस्थिति का अनुभव हुआ करता है, कुछ को कुछ भी नहीं; किन्तु अनुभूतियों को महत्व न दीजियें। केवल परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं पर विश्वास करते रहिये। लूका 11 अध्याय 13 पद के अनुसार जैसे ही आप पिता परमेश्वर से पवित्र आत्मा मांगेगे, वह अपनी प्रतिज्ञा पूर्ण करेंगे। आप पवित्र आत्मा की सामर्थ्य तथा उपस्थिति का अनुभव करने लगेंगे।

लूका 11:13

इसी समय पिता परमेश्वर से मांगिये : ''पिता, जी मेरा अनुरोध है कि आप मुझे पवित्र आत्मा से परिपूर्ण कर दीजिये। इस समय मैं उसे स्वीकार करता हूं। आमीन।'' एक दम उन्हें धन्यवाद देना प्रारंभ कीजिये।

आप पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो सकते हैं

3. ''पवित्र आत्मा ने उन्हें बोलने की सामर्थ्य दी और वे विभिन्न भाषाएं बोलने लगे।''

मसीह यीशु ने ही यह घोषणा की थी कि विश्वासी नयी भाषाएं बोलने लगेंगे और ठीक यही हुआ। पवित्र आत्मा ने उन्हें नयी भाषा बोलने की योग्यता प्रदान की, जो उन्होंने पहले कभी नहीं बोली थी। प्रेरितों के कार्य 19 अध्याय 6 पद के अनुसार नये विश्वासियों ने
प्रेरि 19:6 पवित्र आत्मा प्राप्त किया और उन्होंने नयी भाषाओं में बातें की और नबूवत भी की। ये
1 कुरि 14:1-5 वरदान आपके लिये भी हैं!

✔ अन्य भाषाओं में बातें करना अलौकिक है।

जब आप अन्य भाषाओं में बातें करते हैं आप अपनी आत्मा के द्वारा बातें कर रहे होते हैं। यह उसी पवित्र आत्मा का कार्य हुआ करता है जो आपमें निवास कर रहे होते हैं। आप इस समय ऐसी किसी भाषा में बातें नहीं करते जो आपने पहले से सीख रखी है। आप
1 कुरि 14:13-17 अपने मस्तिष्क से नहीं वरन अपनी आत्मा से यह कार्य कर रहे होते हैं। केवल अपनी भाषा में बातें करना छोड़कर अपनी आत्मा में परमेश्वर की स्तुति करना आरंभ कर दीजिये। यह वैसी ही प्रक्रिया है जैसी रेडियों सुनने की: कार्यक्रम 2 को सुनने के लिये आपको कार्यक्रम 1 छोड़ना पड़ता है। अपने मस्तिष्क की सहायता से बातें करना छोड़कर पवित्र आत्मा में बातें करना प्रारंभ कर दिजिए –यही अन्य भाषाओं में बातें करना है !

✔ बातें पवित्र आत्मा नहीं, आप किया करते हैं।

जब आप परमेश्वर को धन्यवाद देते हुए, बातें करने लगते हैं तब पवित्र आत्मा आपको अलौकिक रूप से नये और सुंदर-सुंदर शब्द प्रदान किया करते हैं। इस पद पर ध्यान दीजिये,
प्रेरि 2:4 यहां लिखा हैं, **''वे विभिन्न भाषाएं बोलने लगे''** बोलना आरंभ **आपको** करना होग। यदि आप ही मुख न खोलें, आप ही बोलना आरंभ न करें, आप कोई भी भाषा बोल नहीं सकेंगे - विभिन्न भाषाओं की तो बात ही छोड़ दीजिये! जब आप अपने फेफड़ों को वायु से भर देते हैं, फिर अपना मुख खोलते हैं कि स्वर बाहर आये और फेफड़ों की वायु बाहर आने लगती है, पवित्र आत्मा ही आपको शब्द प्रदान करेंगे। जो भी शब्द आपके मुख से आये उन्हें बाहर निकालियें।

✔ शब्द पवित्र आत्मा प्रदान किया करते हैं।

इस विचार से न झिझकिये कि कहीं कोई अनुचित शब्द न निकल पड़े
मत्ति 7:9-11 (मत्ती 7:9-11), यदि आप मांगेगे तो आपको पवित्र आत्मा अवश्य मिलेंगे। पवित्र आत्मा ही, और कुछ नहीं और तब आप नये–नये स्वर्गिक शब्द उच्चारने लगेंगे !

✔ चलिये आरंभ करें!

आंखे बंद कीजिये। अपने हाथ ऊंचे कीजिये और परमेश्वर की स्तुति प्रशंसा करना आरंभ कर दीजिए – नयी भाषा में यह संभव है ! शैतान को यह अवसर न दीजिये कि वह आपके पास से यह वरदान चुरा ले। शैतान झूठा है। वह आपसे यह कहने का प्रयास करेगा, ''यह सब एक ढकोसला है – ''यह सब तुम्हारे द्वारा रचा हुआ खेल है,'' किन्तु आप यह जानते हैं कि परमेश्वर अपनी प्रतिज्ञाएं पूर्ण करने में विश्वसनीय है। प्रतिदिन अन्य भाषा में बातें कीजिए – दिन में यह अनेक बार कीजिये, आजीवन यही करते रहें, इसी विषय पर बातें कीजिए कुछ लोग ढेर सारे शब्दों के साथ प्रारंभ करते है कुछ अन्य लोग सरल शब्दों के साथ प्रारंभ करते हैं। परन्तु इससे कोई अन्तर नहीं पड़ता। चमत्कार तो प्रारंभ हो चुका है!

मसीह यीशु में मेरे प्रियवर,

परमेश्वर को उनके वरदान पवित्र आत्मा के लिये धन्यवाद दीजिए। वे आपके मित्र और सहायक हैं। हर परिस्थिति में उन्हीं पर भरोसा कीजिये। वे आपको परमेश्वर की सामर्थ्य तथा प्रेम से परिपूर्ण कर देंगे तथा जीवन-यात्रा में आपको सर्वोत्तम पथ पर ले चलेगा। आपने पवित्र आत्मा के साथ एक सुंदर संबंध स्थापित कर लिया है। पिता से प्रतिदिन पवित्र आत्मा की परिपूर्णता के लिये प्रार्थना कीजिये और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होते रहिये (इफि. 5:18-20) यह तो केवल आरंभ ही है, किन्तु कैसा सुंदर आरंभ!

शायद इस पाठ का अध्ययन एक बार और करना आपको अच्छा लगे। आपने आज जो प्राप्त किया है उससे आपका जीवन सदा के लिये परिवर्तित हो जायेगा!

कंठस्थ करने के लिये

ये पद एक छोटे कागज के टुकड़े पर लिख डालियें। इन्हे प्रतिदिन बार-बार पढ़ियें – यात्रा करते समय बस में, छोटे लंच-ब्रेक के समय, परिवार के साथ, भोजन के समय।

''वे सब पवित्र आत्मा से भर गये और पवित्र आत्मा ने उन्हें बोलने की सामर्थ्य दी और ये विभिन्न भाषाएं बोलने लगे।'' प्रेरि 2:4

''पवित्र आत्मा द्वारा, जो हमें प्राप्त हैं, परमेश्वर का प्रेम हमारे हृदय में उंडेला गया है।'' रोम 5:5

बाइबल की कुन्जियाँ की सूचना

हमारा अगला पाठ होगा जीवन परिवर्तित करने वाले इन विषयों पर:

- परमेश्वर का वचन क्या है?
- यह कैसे कार्य करता है?
- यह आपको स्वतंत्र कैसे कर सकता है?

बाइबल की कुन्जियाँ है:

✘ यह एक अध्ययन श्रृंखला है जो कि परमेश्वर की मूल शिक्षाओं तथा वचन की मूल शिक्षा पर आधारित है।

✘ यह व्यक्तिगत अध्ययन के लिये तैयार किया गया है किन्तु सामूहिक बाइबल अध्ययन के लिये भी उपयोगी सिद्ध होगा।

आधार केवल बाइबल, परमेश्वर का सनातन वचन है यह सशक्त अध्ययन सबके लिये धार्मिकता एवं आन्नद का साधन सिद्ध होगा जो कि इस जीवन एवं मृत्यु के पश्चात आगामी जीवन तक प्रभावी है।

अधिक जानकारी के लिये कृपया सम्पर्क करे:

बाइबल कुन्जियाँ पो.बा. **3178**, नई दिल्ली - 110 003
www: biblekeysonline.com

Copyright © 2000 Victura & InterMedia Services Ltd. All rights reserved. Printed in India 2002